राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा

विचार–विमर्श हेतु प्रारूप

2007

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

प्रकाशन वर्ष – 2007–08 (प्रथम संस्करण)
© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

विचार–विमर्श हेतु वितरित

प्राक्कथन

राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2007 का यह प्रारूप बच्चों की ज्ञान सृजन की क्षमता को केन्द्र में रख कर तैयार किया गया है।

हमारा विश्वास है कि सकारात्मक सोच की प्रवृत्ति रखने वाला, क्रियाशील, निरन्तर सीखने वाला शिक्षक जो बच्चों की हर संभव मदद करता है पाठ्यचर्या को अपने विद्यालय में जीवंत कर सकता है।

शिक्षा स्वयं की खोज करने और अपने बारे में सत्य जानने की निरन्तर चलने वाली प्रकिया है। शिक्षा के द्वारा ऐसे सामाजिक मूल्यों के संवर्धन की जरूरत है, जिन्हे संविधान मे प्रमुखता दी गयी है, जैसे – समानता, न्याय, स्वतन्त्रता, धर्म –निरपेक्षता, मानवाधिकार का सम्मान। पाठ्यचर्या मे ऐसे अवसर उत्पन्न किये गये हैं, जिससे बच्चों में इन मूल्यों के प्रति आस्था का विकास किया जा सकें।

पाठ्यचर्या में मूल्य आधारित शिक्षा का कोई अलग अध्याय नहीं है, क्योंकि पूरी शिक्षा प्रक्रिया में मूल्य समाहित है।

प्रदेश की विविध संस्कृतियाँ अपनी–अपनी विशिष्टताओं के साथ प्रदेश में विद्यमान है। बच्चों में इनके प्रति प्रतिबद्धता विकसित की गयी है ,जिससे वे तेजी से बदलते विश्व मे अपनी सांस्कृतिक विविधता को विशिष्टता की तरह संजोये रखें।

हमने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि बच्चे एक ही कौशल के आधार पर जीवन जीने की परम्परा को तोड़ते हुये नित नवीन कौशलों को सीखें, आत्मविश्वास से भरपूर हों, आर्थिक रूप से मजबूत बनें, और जीवन का आनंद लेते हुये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कायम करें।

पाठ्यचर्या को विकसित करने की यात्रा में अनेक पड़ाव आये, यहाँ हमने विभिन्न संवर्गों से विभिन्न स्थानों पर बातचीत की। विद्यार्थियों, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों, पत्रकारों, शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षार्थियों, शिक्षाविदों के सुझावों से इसे आकार मिला, हम आप सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पाठ्यचर्या का यह प्रारूप अब आपके हाथों में है। इस पर अपने विचार, सुझाव, समीक्षा, अपनी आलोचनाएँ हमें लिख भेजें, ये पाठ्यचर्या को और भी समृद्ध करने में हमारी मदद करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(नंदकुमार)

भा.प्र.से.

संचालक

एससीईआरटी

एवं सचिव, स्कूल शिक्षा, छ.ग. शासन

पत्र व्यवहार का पताः

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर

अनुक्रमणिका

विवरण	पृष्ठ क्र.
अध्याय 1. परिप्रेक्ष्य	**1—10**
1. छत्तीसगढ़ : एक परिचय	
1.1 सांस्कृतिक परिदृश्य	
1. 2 शैक्षिक परिदृश्य	
1.3 शिक्षा की चुनौतियाँ व प्रयास	
1.4 पाठ्यचर्या की रूपरेखा – संक्षिप्त व्याख्या	
1.5 राज्य की पाठ्यचर्या विकसित करने के मार्गदर्शक सिद्धांत	
1.6 शिक्षा का सामाजिक संदर्भ	
1.6.1 लोकतांत्रिक समाज के लिए शिक्षा	
1.6.2 बहुसांस्कृतिक समाज में व्यापक दृष्टिकोण के लिए शिक्षा	
1.6.3 अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जागरूकता के लिए शिक्षा	
1.6.4 अवसरों की समानता के लिए शिक्षा	
1.6.5 मानवीय मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा	
1.6.6 जीवन–कौशलों की शिक्षा	
1.6.7 समसामयिक समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा	
1.7 शिक्षा में गुणवत्ता	
1.8 सौंदर्य व कला के विभिन्न रूपों को समझने के लिए शिक्षा	
1.9 राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा	
1.10 अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए शिक्षा	
1.11 अंतर्राष्ट्रीय नागरित्व	
अध्याय 2. शिक्षार्थी व सीखना	**11—22**
2.1 शिक्षार्थी के सन्दर्भ में सीखना	
2.2 शिक्षार्थी की प्रकृति	
2.3 विकास और सीखना	
2.3.1 पूर्व प्राथमिक स्तर एवं प्राथमिक स्तर	
2.3.2 उच्च प्राथमिक स्तर (किशोरावस्था)	
2.3.3 माध्यमिक शिक्षा	
2.3.4 उच्च माध्यमिक स्तर	
2.4. बच्चे कैसे सीखते हैं ?	
2.5 बच्चे के सीखने की गति धीमी हो जाती है	

2.6 सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि की विभिन्नता एवं क्षमताओं में समानता

2.7 विशेष आवश्यकता एवं सुविधा वंचित बच्चों की शिक्षा

2.8 ज्ञान–सृजन के लिए अध्यापन

अध्याय 3. शिक्षा के विविध आयाम **23–28**

3.1 ज्ञान का क्षेत्र स्वरूप व निर्माण की प्रक्रिया

3.1.1 विषय–व्यवस्था व ज्ञान संरचना

3.2 मूल्य

3.2.1 रुझान व व्यक्तित्व के गुण

3.3 कौशल/दक्षताएँ

3.4 शिक्षा की सामग्री, शिक्षा की प्रक्रिया

3.4.1 विषय क्षेत्रों की प्रकृति एवं अन्य विषयों से संबंध

3.4.1 पाठ और पुस्तकें

3.4.2 बहुकक्षा, बहुस्तरीय शिक्षण (MGML)

अध्याय 4. ज्ञान का सृजन **29–32**

अध्याय 5.शिक्षाक्रम की संरचना **33–44**

5.1 शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

5.2 अध्ययन योजना

5.2.1 प्रारंभिक शिक्षा

5.2.2 उच्च प्राथमिक स्तर (3 वर्ष)

5.2.3 सांदर्भिकता तथा स्थानीय विशिष्टता

5.3 पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

5.4 कार्य–अनुभव (कार्य और शिक्षा)

5.5 कला, शिल्प और संस्कृति

5.6 व्यावसायिक शिक्षा

5.7 कम्प्यूटर विज्ञान (सूचना और प्रौद्योगिकी)

अध्याय 6. शिक्षण–सिद्धांत **45–52**

6.1 पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों का महत्व

6.2 विद्यार्थी की स्थिति

6.3 शिक्षक की स्थिति

6.4 विद्यालय का वातावरण

6.5 सक्षम बनाने वाले वातावरण का पोषण

6.6 कक्षा का वातावरण

6.7 शिक्षक की स्वायत्तता और व्यावसायिक स्वतंत्रता

6.8 शिक्षण–सामग्री

6.9 एडुसेट (EDUSAT)

अध्याय 7. मूल्यांकन **53–59**

7.1 वर्तमान मूल्यांकन प्रणाली

7.2 मूल्यांकन की आवश्यकता

7.3 मूल्यांकन कैसे हो ?

7.4 कक्षा 6, 7 एवं 8 में मूल्यांकन

अध्याय 8. शिक्षक एवं शिक्षा–व्यवस्था **60–65**

8.1 शाला और शिक्षक

8.2 समाज व शिक्षक

8.3 सीखने की प्रक्रिया की समझ

8.3.1 पाठ्यक्रम का ज्ञान

8.3.2 विषय–वस्तु का आत्मचिंतन एवं उसमें सुधार

8.3.3 विषय एवं शिक्षण–विधि का ज्ञान

8.4 शिक्षकों का सुदृढ़ीकरण

8.4.1 संसाधन केन्द्र

8.4.2 सतत मॉनिटरिंग एवं विश्लेषण

8.4.3 पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ

8.4.4 शिक्षक–शिक्षा

8.4.4 शिक्षक–प्रशिक्षण

8.5 व्यावसायिक स्वतंत्रता एवं जिम्मेदारी

8.5.1 शाला में प्रभावी शिक्षण

8.6 संसाधनों की उपलब्धता

8.6.1 शिक्षण–युक्तियाँ

अध्याय 9. क्रियान्वयन का ढाँचा **66–70**

9.1 शिक्षाक्रम की संरचना

9.2 शैक्षिक प्रशासन का ढाँचा

9.3 शैक्षिक संस्थानों की भूमिका

9.3.1 लोक–शिक्षण संचालनालय

9.3.2 राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

9.3.3 आदिवासी विकास विभाग

9.3.4 राजीव गांधी शिक्षा मिशन

9.4 मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन